यंत्र प्राणप्रतिष्ठा विधान

किसी भी यंत्र की प्राणप्रतिष्ठा कैसे करे

कृपया यह पीडीऍफ़ ज्यादा से ज्यादा शेयर करे

सच में हमारे शास्त्रों में किसी भी यंत्र की प्राण प्रतिष्ठा की जो विधि बतायी गयी है वो थोडा सामान्य व्यक्ति के लिए काफी कठिन हे, परन्तु जहाँ तक मैंने अपने जीवन में अनुभव में पाया है की यदि निचे बताये गए विधि अनुशार भी यदि पूर्ण श्रधा एवं आस्था के साथ अनुकरण किया जाए तो इसके परिणाम में कोई विशेष अंतर नहीं रहता है ! अतः आज जन-कल्याण हेतु यह अति गोपनीय रहस्य आपके समक्ष उजागर कर रहा हूँ , आशा है की यह लेख आपके लिए उपयोगी साबित होगी -

इस प्रकार के कई अलग अलग धार्मिक एवं ज्योतिषीय लेख प्राप्त करने के लिए हमारे वोट्सएप नम्बर से जुड़े **+91 84 85 964 964**

विधि के बारे में जानने से पहले कुछ विशेष बात को जान ले - जो व्यक्ति यह विधि करता हे वो सम्पूर्ण रूप से किसी योग्य गुरु द्वारा दीक्षित होना चाहिए - अगर आपने दीक्षा नहीं ली तो आप किसी योग्य गुरु से दीक्षा जरुर ले क्यों की अगर आप इस कर्म के हकदार नहीं हे तब तक इसे ना करे - दूसरी बात कई बार ऐसा देखा गया हे की आपकी कुंडली के अनुसार सिद्धि कारक ग्रहों की वजह से भी कभी

कभी विधि करने के बाद भी लाभ नहीं मिलता तो शास्त्र पर संदेह ना करे

इसमें कुछ गुरु गामी मंत्रो का प्रयोग नहीं बताया गया हे क्यों की वह केवल एक गुरु ही अपने दीक्षित शिष्य को बता शकता हे - आप चाहे तो किसी योग्य गुरु से सम्पूर्ण मूल मंत्रो की दीक्षा ले कर लाभान्वित हो शकते हे

हमारे यहाँ से भी जो यंत्रो को दिया जाता हे वो सभी यंत्र वेद की दीक्षा लिए हुए पंडितो द्वारा इसी प्रकार की दिव्य मंत्रो से सिद्धि की जाती हे
इसी प्रकार प्राणप्रतिष्ठा किया और दिव्य मंत्रो से चैतन्य किया कोई भी यंत्र प्राप्त करने के लिए हमारा संपर्क करे - हरी ॐ तत्सत

अब आगे देखे यंत्र की प्राणप्रतिष्ठा विधि विस्तार से

सर्वप्रथम , अपने यंत्र को लेकर किसी उचाई पर या किसी आसन पर रख लें ! फिर हाथ में जल , अक्षत और पुष्प लेकर निम्न मन्त्र पढ़ें -

ॐ अद्य श्री ब्राह्मणों द्वितीये परार्धे श्रीश्वेत्वाराहत्कल्पे वैवस्त्मन्वन्तरे अष्टाविनशतितमें कलियुगे कलिप्रथम चरणे जम्बुद्वीपे भरतखंडे भारतवर्षे बौधावतारे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते पुण्यक्षेत्रे ....(स्थान का नाम), ...(संवत्सर का नाम) संवत्सरे , ...(हिंदी महीने

का नाम) मासे , ...(शुक्ल / कृष्ण पक्ष का नाम) पक्षे , ...(तिथि का नाम) तिथौ , ...(वार का नाम जैसे सोमवार इत्यादि) वासरे मम ....(अपना नाम) आत्मनः श्रुतिस्मृति - पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं ....(यंत्र का नाम) यंत्रस्य ताडनावघातादी - दोष्परिहार्थं धूपोतारण पूर्वकं प्राणप्रतिष्ठा करिष्ये ! यह बोलकर किसी पात्र में उन्हें (इस जल , अक्षत एवं फूल को) छोड़ दें ! इसके बाद यंत्र पर शुद्ध घी लगा दें , फिर दूध और जल मिलाकर उससे स्नान कराएं साथ ही यंत्र का इष्ट मन्त्र बोलते रहें !

फिर विनियोग करें (अर्थात हाथ में सिर्फ जल लेकर निम्न मन्त्र पढ़ कर किसी पात्र में इस जल को छोड़ देना है) -

ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मा-विष्णु-रुद्रा ऋषयः ऋग्यजुर्सामानी छन्दांसी प्राणशक्तिर्देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रों कीलकं अस्मिन यंत्रे श्री ....(यंत्र का नाम) प्राण प्रतिष्ठापने विनियोगः !

इसके बाद यंत्र को एक हाथ में लेकर तथा दुसरे हाथ में दूर्वा या कुश लेकर निम्न मन्त्र बोलते हुए यंत्र पर चलाते रहें ---

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ आं ह्रीं क्रों अस्य यंत्रस्य श्री ....(यंत्र का नाम) यंत्रस्य प्राणा इह प्राणाः !

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ आं ह्रीं क्रों अस्य यंत्रस्य श्री ....(यंत्र का नाम) यंत्रस्य जीव इह स्थितः !

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ आं ह्रीं क्रों अस्य यंत्रस्य श्री ....(यंत्र का नाम) यंत्रस्य सर्वेंद्रियानी वांड-मनस्त्वकचक्षु: श्रोत्रजिह्वा-घ्राण-प्राणा इहागत्य इहैव सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा !

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टम यज्ञं समिमं दधातु ! विश्वे देवास इह मादयन्ताम ॐ प्रतिष्ठ !!

एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्र तेन यज्ञेन यजन्ते ! सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति अस्मिन यंत्रे श्री ....(यंत्र का नाम) यंत्रे यन्त्र देवता ....(यंत्र देवता का नाम) सुप्रतिष्ठता वरदा भवन्तु !

फिर गंध , पुष्पादि से पंचोपचार (स्नान , चन्दन , पुष्प , धूप- दीप , नैवेद्य एवं आरती) पूजन करें और यंत्र के षोडश संस्कारों की सिद्धि के लिए 16 बार इष्ट मन्त्र का जप करें -

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ॐ हंसः सोऽहं सोऽहं हंसः शिवः अस्य यंत्रस्य श्री ....(यंत्र का नाम) यंत्रस्य प्राणा इह प्राणाः ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं ह्रीं क्रों अस्य यंत्रस्य श्री ....(यंत्र का नाम) रत्नस्य / यंत्रस्य जीव इह स्थितः ! सर्वेंद्रियानी वांड-मनस्त्वकचक्षु: श्रोत्रजिह्वा-घ्राण-प्राणा इहागत्य इहैव सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा !

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ असुनीते पुनरस्मासु चक्षु : पुनः प्राणमिह नो धेहि भोगम ! ज्योक पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृडया नः स्वस्ति !!

फिर - अस्य यंत्रस्य षोडश संस्काराः सम्पद्यन्ताम !!

इस मन्त्र को बोलकर ' यंत्र में प्राण , जीव , वाणी , मन , त्वचा , नेत्र , कर्ण , जिह्वा , नासिका आदि सभी इन्द्रियां निवास कर रही है और यह यंत्र साक्षात भगवत्स्वरूप हो गया है ऐसा मानकर यंत्र को यदि संभव हो सके तो ***षोडशोपचार पूजन कर लें !

अंत में उस यंत्र से सम्बंधित मुख्य मन्त्र का कम से कम 36 हजार या कल्युग के अनुसार तिन गुना जप यानी सवा लाख जाप कर उस यंत्र को उसके स्थान पर रख दे ! इसके बाद अपने सभी इष्ट देवता , ग्राम देवता , गृह देवता तथा घर में उपस्थित सभी बुजुर्ग को प्रणाम आशीर्वाद ग्रहण कर लें जब तक इसे सम्पूर्ण उचित मात्रा में मंत्रो को नहीं किया जाएगा तब तक यह यंत्र लाभ नहीं देगा तो मन्त्र का पुर्स्चरण जरुर करे

*** इसकी विधि संभवतः जल्द ही लिखने क प्रयत्न करूंगा वैसे आप किसी नजदीकी ब्रह्मण से संपर्क कर इसकी जानकारी ले सकते हैं

नोध ले - प्राण - प्रतिष्ठा प्रारंभ करने से पहले पूजन में प्रयोग होने वाले सामग्री के बारे में बता देना मैं उचित समझता हूँ !

सामग्री :

१- गंगा जल / शुद्ध ताज़ा जल
२- अक्षत
३- पुष्प
४- दीपक
५- घी (गाय का)
६- धूप / धूप बत्ती
७- कच्चा दूध (गाय का)
८- दही (गाय के दूध का)
९- मधु

१०-शर्करा
११- रोली चन्दन , सिन्दूर , चन्दन
१२- छोटा सा वस्त्र का टुकड़ा
१३- आसन (स्वयं के लिए एवं रत्न / यंत्र के लिए)
१४- दुर्वा एवं कुशा
१५- सुगन्धित द्रव्य (इत्र)
१६- बड़ा सा पात्र - २/३
१७- नैवेद्य - ५० ग्राम
१८- फल - १/२
१९- पान पत्ता - १
२०- सुपारी -१
२१- कपूर (आरती के लिए)

(उपरोक्त सामग्री षोडशोपचार पूजन एवं मात्र एक रत्न / यंत्र हेतु है)

मुद्रा ज्योतिष कार्यालय

ज्योतिष और वास्तु से जुड़े सभी कार्यो के लिए हमारा संपर्क करे

वोट्सएप नंबर फॉर एस्ट्रो टिप्स +91 84 85 964 964

मोबाइल नंबर फॉर कोलिंग +91 98 24 162 904

हरी ॐ तत्सत